काशी

नगरी एक : रूप अनेक

संपादक

ओम प्रकाश केजरीवाल

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

बनारस में ग़ालिब

संजय गर्ग

ग़ालिब उर्दू के महानतम शायर हैं। यदि किसी व्यक्ति से उर्दू भाषा के हवाले से कोई एक नाम पूछा जाए तो निसंदेह वह गालिब का ही होगा। अपने बहत्तर वर्ष के जीवन में उन्होंने केवल एक माह बनारस में बिताया, लेकिन बनारस से प्रभावित होकर जो कुछ उन्होंने बनारस की शान में लिखा उसके आधार पर उन्हें बनारस-प्रेमियों की सूची में अव्वल रखा जा सकता है।

गालिब ने 1825 से 1833 तक अपनी पारिवारिक पेंशन बहाल करवाने के लिए कड़ा संघर्ष किया। सारी कोशिशें नाकाम होने पर उन्होंने कलकत्ता जाकर गवर्नर जनरल से गुहार लगाने का निश्चय किया। 1826 में गालिब कलकत्ता जाने के लिए दिल्ली से रवाना हुए। कभी पालकी में, कभी घोड़े की पीठ पर और कभी नाव से नदी पार करते हुए गालिब कानपुर होते हुए लखनऊ पहुंचे, जहां उन्होंने एक वर्ष बिताया। अक्तूबर 1827 में वे पुनः कलकत्ते की ओर रवाना हुए। रास्ते में उनका पड़ाव था बनारस। बनारस गालिब पर इस कदर गालिब हुआ कि वे नियत समय से कहीं ज्यादा—करीब एक महीने तक बनारस में रहे। यहां अपने रहने के लिए उन्होंने सराय औरंगाबाद (या नौरंगाबाद) में हवेली किराए पर ली और जी भरकर बनारसी जीवन-शैली का आनंद लिया। बनारस से वे इतने प्रभावित थे कि चालीस साल बाद अपने एक दोस्त को वे लिखते हैं:

> बनारस का क्या कहना। ऐसा शहर आपको और कहां मिलेगा? मैं अपनी युवावस्था की सांझ में यहां आया। अगर उस समय मैं जवान होता तो यहीं बस गया होता, और इसे छोड़ कर कहीं नहीं जाता।

बनारस के बारे में एक अन्य जगह गालिब लिखते हैं:

का 'बे में जा बजाएंगे नाकूस[1]।
बनारस के मंदिरों में बांधेंगे अहराम[2]।।

इस तरह बनारस के इश्क में गिरफ्तार होने वाले और काशीवास की इच्छा रखने वाले गालिब अकेले शायर नहीं थे। गालिब के जन्म से बहुत पहले फारसी के एक मशहूर शायर शेख अली हजीं लगभग 1734 ई. में बनारस आए थे। यहां से वे कहीं नहीं गए और यहीं 1766 ई. में उनकी मृत्यु हुई। बनारस के बारे में हजीं ने लिखा था :

अज बनारस न-रवम, मा 'बद-ए आम अस्त ईन जा।
हर बिरहमन पिसर-ए लछमन-ओ-राम अस्त ईन जा।

(मैं बनारस से नहीं जाऊंगा, (क्योंकि) यह (स्थान) सभी लोगों का पूजा स्थल है; यहां का हर ब्राह्मण (निवासी) राम और लक्ष्मण की संतान है।)

बनारस-वासी होने की आकांक्षा गालिब कभी पूरी नहीं कर सके, परंतु बनारस के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन उन्होंने अपनी एक रचना में भरपूर किया है। अपने बनारस प्रवास के दौरान गालिब ने बनारस की प्रशंसा में 108 शे'र की एक मसनवी लिखी जिसमें उन्होंने बनारस को 'का'बा-ए हिंदुस्तान' कहा है। फारसी भाषा में रचित यह मसनवी *चिराग-ए दैर* (मंदिर दीप) के नाम से विख्यात है। इसी को 'मसनवी महशर-ए-राज' के नाम से भी जाना जाता है, जिसका लिप्यंतरण तथा शब्दार्थ यहां दिया जा रहा है।

चिराग-ए-दैर

1. *नफस बा-सूर दमसाजस्त इमरोज।*
खमोशी महशर-ए राजस्त इमरोज।।

2. *रग-ए संगम शरारे मी-नवीसम।*
कफ़-ए खाकम गुबारे मी-नवीसम।।

3. *दिल अज शोर-ए शिकायतहा ब-जोशस्त।*
हबाब-ए बे-नवा तूफा खरोशस्त।।

4. *ब-लब दारम जमीर आला बयानी।*
नफस खूं-कुन जिगर पाला फुगानी।।

5. *परीशांतर ज-जुल्फम दास्तां नेस्त।*
ब-दा' वा हर सर-ए मूयम जबा नेस्त।।

6. *शिकायत गूना-इ दारम ज़-अहबाब।*
कतान-ए ख्वेश मी-शोयम ब- महताब।।

7. *दर आतिश जब नवा-ए साज-ए ख्वेशम।*
कबाब-ए शोला-ए आवाज-ए ख्वेशम।।

8. *नफस अबरेशम-ए साज-ए फुगांनस्त।*
बसार-ए नै तबम दर उसत ख्वांनस्त।।

9. *मुहीत अफगन्दा बे/ गौहरम-रा।*
चू-गर्द अफशांदरा आहन जौहरम-रा।।

10. *ज-देहली ता बेरुं आवुर्दा बख्तम।*
ब-तुफान-ए तग़ाफुल दादा रख्तम।।

11. *कस अज अहल- ए बतन गमख्वार-ए मन नीस्त।*
मुरा दर दहर पिन्दार-ए वतन नीस्त।।

12. *ज-अरबाब-ए वतन जौयम सेह तन-रा।*
कि रंग-ओ-रौनक अन्द ई नुह चमन-रा।।

13. *चू खुद रा जल्वासंज-ए नाज ख्वाहम।*
हम अज हक फज्ल-ए हक रा बाज ख्वाहम।।

14. *चू हिर्ज-ए बाजू-ईमां नवीसम।*
हिसामउद्दीन अहमद खां तराजम।।

15. *चू पैवन्द 'ए कबा-ए जा तराजम।*
अमीनउद्दीन अहमद खां तराजम।।

मंदिर का दीपक

1. (मेरी) सांस आज सूर (प्रलय के दिन फूंका जाने वाला वाद्य) की भांति आवाज कर रही है; (और) आज (मेरे) मौन में भी रहस्यों का एक प्रलय मचा है।

2. मैं पत्थर की धमनी होने पर भी चिंगारियां लिख रहा हूं; मुठ्ठी भर धूल होने पर भी मिट्टी (की कहानी) ही लिख रहा हूं।

3. मेरा दिल शिकायतों के जोर से जोश में है; और (इस) बे-आवाज बुलबुले में तूफान जैसी तेजी है।

4. मेरे अधरों पर (मेरी) अंतरात्मा की उच्चकोटि की बातें हैं; (मेरी) सांस रक्ताभ है (और) हृदय आर्तनाद कर रहा है।

5. मेरी कहानी केशराशि से अधिक घुमावदार है; मेरे बाल की हरेक नोक यही दावा करने के लिए जबान बन गई है।

6. अपने मित्रों से मैं इस ढंग से शिकायत कर रहा हूं; (जैसे कि) चांदनी रात में मैं अपना कतान (एक प्रकार का सफेद वस्त्र) धो रहा हूं।

7. मैं अपनी वाद्य-ध्वनि की अग्नि से झुलस रहा हूं; और अपनी आवाज के शोले से दग्ध हो रहा हूं।

8. (मेरी) सांस आर्तनाद करते हुए वाद्य (रूपी हृदय) का तार है; (और) मेरी हड्डियां बांसुरी की तरह आग से भरी हुई हैं।

9. मेरे (जीवन रूपी) मोती को (भाग्य के) समुद्र ने (दिल्ली से) बाहर फेंक दिया है; (और) जैसे लोहा (जंग लगने पर) अपनी धूल झाड़ता है, उसी तरह भाग्य ने मेरे पराक्रम को भी झाड़ दिया है।

10. मेरी किस्मत मुझे दिल्ली से बाहर ले आई है; (और उसने) मेरा सामान उपेक्षा के तूफान को सौंप दिया है।

11. मेरे देशवासियों में से कोई भी मेरी व्यथा नहीं समझता; (लगता है) इस दुनिया में मेरा कोई वतन है ही नहीं।

12. मुझे अपने वतन वालों में से तीन लोगों (से मिलने) की इच्छा है; कि यही (लोग) इस नई बगिया (बनारस) की रंग और रौनक हैं।

13. चूंकि मैं स्वयं मान-अभिमान का दर्शन करना चाहता हूं; इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि फज्ले हक (मौलाना फज्ले हक खैराबादी) से पुनः भेंट हो।

14. चूंकि मैं ईमान की भुजा के लिए तावीज लिख रहा हूं; इसलिए हिसामउद्दीन हैदर खां (दिल्ली के बल्लीमारान में हवेली हिसामुद्दीन हैदर आज भी है) का नाम लिख रहा हूं।

15. चूंकि मैं अपनी जान रूपी वस्त्र पर (सुंदर) पैबंद टांकना चाहता हूं; (इसलिए) मैं अमीनउद्दीन अहमद खां (इनके नाम पर दिल्ली के गली कासिमजान में अमीनिया गर्ल्स स्कूल आज भी है) (का नाम) टांक रहा हूं।

16. *गिरफ्तम कज जहां आबाद रफ्तम।*
मर ईनां-रा चिरा अज याद रफ्तम।।

16. माना कि मैं जहानाबाद (शाहजहांनाबाद–दिल्ली) से निकल आया हूं; मगर इन (तीन मित्रों) की याद से कहां निकल पाया।

17. *मगो दाग कज जहां आबाद रफ्तम।*
गम-ए बेमेहि-ए ई दोस्ता सोख्त।।

17. मुझे (दिल्ली के) बागों के वियोग ने नहीं जलाया है; (बल्कि) इन (तीन) मित्रों की निष्ठुरता ने फूंक डाला है।

18. *जहां आबाद गर नबुवद अलम नीस्त।*
जहां आबाद बादा जा-ए कम नीस्त।।

18. यदि जहानाबाद (दिल्ली) न रहे तो (मुझे) दुःख नहीं होगा; यह दुनिया आबाद है तो (मुझे) जगह की कमी नहीं है।

19. *नबाशद कहत-ए बह-ए आशियाने।*
सर-ए शाख-ए गुले दर गुल्सिताने।।

19. आशियाना (घर) बनाने के लिए (जगह का) अकाल नहीं हैः बगिया में फूलों भरी शाख के ऊपर (स्थान उपलब्ध है)।

20. *सिपस दर लालाजारी जा तवांर्द।*
वतन-शाख-ए गुले दर गुल्सिताने।।

20. या फिर किसी उपवन में (रहने की) जगह की व्यवस्था कर सकते हैं; (और) वतन (की याद) का त्याग कर सकते हैं।

21. *बखातिर दारम ईनक गुल जमीने।*
बहार आई न, सुवाद-ए दिल-नशीने।।

21. मैंने इस फूलों भरी जमीन (बनारस) से दिल लगाया है; (यह नगर) ऋतुराज का दर्पण है और हृदय में अंकित करने योग्य है।

22. *कि मी आयद ब-दा-वा गाह लाफश।*
जहां आवाद अज बह-ए तवाफश।।

22. क्योंकि यह सत्य है कि अपनी शेखी का दावा करने के लिए; जहानाबाद (दिल्ली) को यहां (बनारस) की परिक्रमा करनी होती है।

23. *निगह-रा दा 'वा-ए गुलशन अदाइ।*
अजां खुर्रम बहार-ए आशनाइ।।

23. (बनारस को देखने से) दृष्टि उपवन-दर्शन का दावा करती है; (और) यहां की सुपरिचित बहार से आनंदित होती है।

24. *सुखन-रा नाजिश-ए मीनू किमाशी।*
ज-गुलबांग-ए सताइशहा-ए काशी।।

24. (आज मेरे) काव्य को इस बात का अभिमान है कि स्वर्गिक आनंददायनी काशी की (मैं) उच्चस्वर से प्रशंसा करने जा रहा हूं।

25. *तआ'ल अल्लाह बनारस चश्म-ए बद दूर।*
बहिश्त-ए खुर्रम-ओ-फिरदौस-ए मा'मूर।।

25. हे महान ईश्वर! बनारस को तू बुरी नजर से दूर रख; (क्योंकि यह) आनंददायनी और फिरदौस-ए-मा-मूर (सात स्वर्गों में से एक का नाम; भरा पूरा स्वर्ग) (ही) है।

26. *बनारस-रा कसे गुफ्ता कि चीनस्त।*
हनूज अज गंगचीनश बर जबीनस्त।।

26. किसी ने (सौंदर्य में) बनारस की तुलना चीन से की थी; (और आज तक) उस (बनारस) के माथे पर शिकन के रूप में गंगा की धार विद्यमान है।

27. *ब-खुश पुरकारी-ए तर्ज-ए वजूदश।*
ज-देहली मी रसद हरदम दरुदश।।

27. (बनारस का) अस्तित्व इतने सुंदर रूप में विद्यमान है; कि दिल्ली (नगर) भी हमेशा (इसे अपनी) शुभकामनाएं भेजता है।

28. *बनारस-रा नगर दीदस्त दर ख्वाब।*
कि मीगरदद ज-नहरश दर दहन आब।।

28. मगर (दिल्ली ने) बनारस को (संभवतः) स्वप्न में ही देखा; (और इसी से) उसके मुंह में पानी आ गया जो नहर बन कर बहने लगा।

29. *हसूदश गुफ्तन आईन-ए अदब नीस्त।*
वलेकिन गिब्ता गर बाशद अजब नीस्त।।

29. (कि दिल्ली को बनारस से) ईर्ष्या है, यह कहना असाहित्यिक होगा; मगर उसे (बनारस की तरह) हो जाने की आकांक्षा है, इसमें संदेह नहीं है।

30. *तनासुख मशरबां चूं लब कुशायन्द।*
ब-केश-ए ख्वेश काशी-रा सतायन्द।।

30. पुनर्जन्म मानने वाले (हिंदू) जब भी अपने अधर खोलते हैं; वे अपने धर्मानुसार काशी की प्रशंसा करते हैं।

31. *कि हरकस का दरां गुलशन ब-मीरद।*
कदगर पैवन्द-ए जिस्मानी न-गीरद।।

31. (कहते हैं) कि जो कोई भी इस उपवन (काशी) में मरता है; उसे फिर शरीर नहीं धारण करना पड़ता है।

32. *चमन सरमाया-ए उम्मेद गरदद।*
ब-मुर्दन जिन्दा-ए जावेद गरदद।।

32. (यह) उपवन आकांक्षाओं की पूंजी बन जाता है; (और) यहां मरकर अमरत्व प्राप्त होता है।

33. *जहे आसूदगी बख्श-ए रवांहा।।*
कि दाग-ए चश्म मी शोयर ज-जांहा।।

33. आत्माओं को तृप्ति देने वाले (इस नगर) का क्या कहना; जो दिल से कुदृष्टि के असर को धो डालता है।

34. *शगुफ्ती नीस्त अज आब-ओ-हवायश।*
कि तन्हा जा शवद अंदर फजायश।।

34. यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस (नगर) की आबो-हवा; (और) वातावरण में प्राणदायिनी शक्ति है।

35. *बया ऐ गाफिल अज कैफियत-ए नाज।*
निगाहे बर परीजादानश अंदाज।।

35. सौंदर्यानंद से अनभिज्ञ इंसान! बता; (और उससे पहले बनारस की) अप्सराओं पर दृष्टि डाल।

36. *हमा जांहा-ए बेतन कुन तमाशा।*
न-दारद आब -ओ -खाक ईं जल्वाहाशा।।

36. इन सभी अशरीरी आत्माओं का दर्शन कर; (क्योंकि) मिट्टी और पानी से बने हुए शरीरों में (तो) ऐसा सौंदर्य नहीं होता।

37. *निहाद-ए शां चू बू-ए गुल गिरां नीस्त।*
हमा जानंद जिस्मे दर्मयां नीस्त।।

37. (यहां) के वातावरण में फूलों की सुगंध का जैसे कोई मोल ही नहीं है; (क्योंकि यह सुगंध) सभी जीवधारियों के शरीरों में बसी हुई है।

38. *खश-ओ-खारश गुलिस्तानस्त गोई।*
गुबारश जोहर-ए जानस्त गोई।।

38. (यहां की) घास-फूस भी उपवन कही जाती है; (और) इसकी मिट्टी को प्राणवान कहा जाता है।

39. *दरी दैरीना दैरिस्तान-ए नैरंग।*
बहारश ऐमनस्त अज गर्दिश-ए रंग।।

39. मंदिरों वाले इस प्राचीन नगर की माया ऐसी है; (कि) यहां की बहार काल-चक्र के प्रभाव से मुक्त है।

40. *चे फरवर्दी, चे दी-मान-ओ-चे मुरदाद।*
ब-हर मौसम फिजायश जन्नत आबाद।।

40. चाहे फरवर्दी (वसंत) हो, या दी (शीत) हो, या फिर अमरदाद (ग्रीष्म) (फारसी महीनों के नाम) का महीना हो; हर ऋतु में यहां का वातावरण स्वर्गिक रहता है।

41. *बहारां दर शिता-ओ-सैफ ज-आफाक।*
ब-काशी मी-कुनद किशलाक-ओ-यीलाक।।

41. दुनिया (भर) की बहारें हर ग्रीष्म व शरद काल में; काशी में निवास करती हैं।

42. *बुवद दर अर्ज बाल अफशानी-ए नाज।*
खिजानश सन्दल-ए ओ चमनजार।

42. जब सुंदरियां अपने बाल खोले हुए होती हैं; (तो) पतझड़ उनके माथे पर चंदन बन जाता है।

43. *ब-तस्लीम-ए हवा-ए आं चमनजार।*
ज-मौज -ए गुल बाहरां बस्ता जुन्नार।

43. इस पुष्पवाटिका के वातावरण के असर से; बहार ने पुष्प रूपी धारा का जनेऊ पहन लिया है।

44. *फलक-रा कश्काअश गर बर जबीं नीस्त।*
पस ईं रंगीनी-ए मौज-ए शफक चीस्त।।

44. यदि आकाश के माथे पर बनारस का तिलक नहीं है; (तो फिर) क्षितिज पर यह रंगीन धारा (सी) क्या है।

45. *कफ-ए हर खाकश अज मस्ती कनिश्ते।*
सर-ए हर खारश अज सब्जी बहिश्ते।।

45. यहां की मुट्ठी-भर धूल भी पूजास्थलों की हैसियत रखती है; (और) यहां के हर कांटे की नोक हरियाली में स्वर्ग (के समान) है।

46. *सुवादश पाए तख्त-ए बुतपरस्ता।*
सरापायश जियारतगाह-ए मस्तां।।

46. यह भूमि मूर्तिपूजकों (हिंदुओं) की राजधानी है; (और यह) संपूर्ण नगर भक्तों के लिए तीर्थस्थान है।

47. *इबादतखाना-ए नाकूसियानस्त।*
हमा ना का बा -ए हिंदोस्तानानस्त।।

47. शंख (बजाने) वालों (हिंदुओं) के लिए यह (नगर) पूजास्थल है; (और सच तो यह है कि) यह पूरा (नगर) हिंदुस्तान का काबा (मक्का) है।

48. *बुतानश-रा हियूला शोला-ए तूर।*
सरापा नूर-ए ईजद चश्म-ए बद दूर।।

48. यहां की सुंदरियां तूर (एक पर्वत) के प्रकाशपुंज की प्रतिकृति हैं; (और ये) सर से पांव तक ईश्वरीय प्रकाश (से युक्त) हैं, इन पर कुदृष्टि न पड़े।

49. *मयांहा नाजुक-ओ -दिलहा तवांना।*
ज-नादानी ब-कार-ए ख्वेश दाना।।

49. (इनकी) कमर कोमल है और हृदय कठोर हैं; (वैसे तो) ये नादान हैं पर अपने काम में बहुत समझदार हैं।

50. *तबस्सुम बस कि दर लबहा तबी ईस्त।*
दहनहा रश्क-ए गुलहा-ए रबी ईस्त।।

50. इनके अधरों पर (की) मुस्कुराहट प्राकृतिक है; (और) इनके मुख से रबी (बसंत) के फूलों को भी ईर्ष्या होती है।

51. *अदाई यक गुलिस्तां जल्वा सरशार।*
खरामी सद कयामत फित्ना दर बार।।

51. इनकी हरेक अदा में (जैसे) एक खिला हुआ उपवन है; (और) इनकी चाल में सैंकड़ों प्रलय बसे हुए हैं।

52. *ब-लुत्फ अज मोज-ए गौहर नर्म रौतर।*
ब-नाज अज खूंन-ए आशिक गर्म दोतर।।

52. आनंद में वे मोतियों की लहर से भी कोमल हैं; (और) घमंड में प्रेमी के रक्त से भी दुगना गर्म हैं।

53. *ज-अंग्रज-ए कद, अंदाज-ए खिरामे।*
बपाए गुलबने गुस्तदा दामे।।

53. उनके कद की लंबाई से, उनकी चाल ऐसी हो गई है;जैसे किसी ने गुलाब की झाड़ी के नीचे जाल बिछा दिया हो।

54. *ज-रंगी जल्वाहा गारत गर-ए होश।*
बहार-ए बिस्तर-ओ -नौरोज आगोश।।

54. वे अपने रंगीन बनाव-शृंगार से (देखने वालों के) होश उड़ा देती हैं; वे बिस्तर की बहार और आलिंगन का नववर्ष हैं।

55. *ज-ताब-ए जल्वा-ए ख्वेश आतिश अफरोज।*
बुतान-ए बुतपरस्त-ओ -बरहमन सोज।।

55. अपने रूप-शृंगार की गर्मी से वे आग लगा देने वाली हैं; (और) मूर्तिपूजकों और (यहां तक की) ब्राह्मणों को (भी प्रेम) अग्नि में जलाने वाली हैं।

56. *ब-सामान-ए दो आलम गुल्सितां रंग।*
ज-ताब-ए रुख चरागान-ए लब-ए गंग।।

56. दोनों जहान (लोक-परलोक) की विशेषताएं रखने के कारण वे उपवन का (सा) रंग लिए हुए हैं; (और) उनके चेहरों की चमक से गंगा तट पर दीप-ज्योति हो रही है।

57. *रसांदा अज अदा-ए सुस्त-ओ-शूई।*
ब-हर मौज-ए नवीद-ए आबरुई।।

57. (गंगा में) अपने नहाने-धोने की अदा से; (वे) हर लहर को मान-प्रतिष्ठा का संदेश देती हैं।

58. *कयामत कामता मिजगां दराजां।*
ज-मिजगा बर सफ-ए दिल नेजा बाजा।।

58. (वे) ऊंचे कद और लंबी पलकों वाली हैं; (और अपनी) पलकों से वे हृदयों की कतारों पर भाले चलाती हैं।

59. *ब-तन सरूाया-ए अफजाईश-ए दिल।*
सरापा मुजदा-ए आसाईश-ए दिल।।

59. उनके शरीर हृदय (की आकुलता) बढ़ाने की पूंजी हैं; (और वे) सर से पांव तक हृदयाभिराम हैं।

60. *ब-मस्ती मौज-रा फर्मूदा आराम।*
ज-जग्जे आब -रा बख्शीदा अंदाम।।

60. अपनी मस्ती से (उन्होंने गंगा की) लहरों को स्थाई कर दिया है; (और अपने) अनोखेपन से पानी को मूर्त रूप दे दिया है।

61. *फतादा शोशि-ए दर कालिब -ए आब।*
ज-माही सद दिलश दर सीना बेताब।

61. (उनके नहाने से) जलराशि में हलचल मच गई है; (और पानी के) सीने में सैंकड़ों दिल मछलियों की तरह मचल रहे हैं।

62. *ज-बस अर्ज-ए तमन्ना मी-कुदन गंगा।*
ज-मौज आगोशहा वा मी-कुनद गंगा।।

62. गंगा उनके सामने अपनी इच्छाभिव्यक्ति करना चाहती है; (और इसीलिए वो) अपनी लहरों को आलिंगन हेतु खोल रही है।

63. *ज-ताब-ए जल्वाहा बेताब गश्ता।*
गुहरहा दर सदफहा आब गश्ता।।

63. उनके रूप-शृंगार की गर्मी से बेताब होकर; मोती अपनी सीपियों में पानी-पानी हो गए हैं।

64. *मगर गोई बनारस शाहिदे हस्त।*
ज-गंगश दर सुब्ह-ओ-शाम आईना दर दस्त।।

64. ये कहना होगा कि बनारस एक प्रेमिका है; जो प्रत्येक प्रातः व संध्या काल में गंगा का दर्पण हाथ में लिए (बनाव-शृंगार करती) है।

65. *नियाज-ए अक्स रू-प आं परी चेह।*
फलक दर जर गिरफ्त आईना अज मेह।।

65. (और) इस (बनारस) के परी (समान) चेहरे की छवि देखने के लिए; आकाश ने सोने का जड़ाऊ दर्पण-सूरज (के रूप में) बना दिया है।

66. *ब-नाम ईजद जहे हुरन-ओ जमालश।*
कि दर आईना मी रकस्द मिसालश।।

66. हे ईश्वर! (बनारस के) रूप-सौंदर्य का क्या कहना; (जो कि) दर्पण में नृत्य करता है।

67. *बहारिस्तान-ए हुस्न-ए ला-उबालीस्त।*
ब-किशवरहा समर दर बे-मिसालीस्त।।

67. (यह नगर) उन्मुक्त सौंदर्य की वसंत-स्थली है; (और) सभी देशों में यह (ऋतु) फल अद्वितीय है।

68. *ब-गंगश अक्स ता परतौ फिगन शुद।*
ब-नारश खुद नजीर-ए ख्वेशतन शुद।।

68. जब गंगा में (इस नगर की) देदीप्यमान छवि पड़ी; (तो) वह अपनी ज्योति से स्वयं अपनी उपमा प्रतीत हुई।

69. *चू दर आईना-ए आबश नमूदन्द।*
गजन्द-ए चश्म जख्म अज वै रबूदन्द।।

69. जब पानी के दर्पण में (इस नगर की) छवि उभरी; तो आंखों में चोट लगने का खतरा तुरंत समाप्त हो गया।

70. *ब-चीं न-बुवद निगारिस्तां चु ऊ ई।*
ब-गेती-नरस्त शारिस्तां चु ऊ ई।।

70. चीन में (भी) सुंदरियों का ऐसा (कोई) नगर नहीं है; (और पूरी) दुनिया में वन-उपवन वाला इस (बनारस) जैसा कोई नगर नहीं है।

71. *बयाबां-दर-बयाबां लालाजारश।*
सरापा मुजदा-ए आसाईश-ए दिल।।

71. जंगल-जंगल यहां फूलों के उपवन हैं; (और उपवन-उपवन (यहां) नई बहारें हैं।

72. *शबे पुर्सीदम अज रौशन बयाने।*
ज-गर्दिशहा-ए द गर्दू राजदाने।।

72. एक रात (मैंने) एक ज्ञानी से पूछा; जो कि नियति के कालचक्र को जानने वाला था।

73. *कि बीनी नेकूईहा अज जहां रफ्त।*
वफा-ओ-मेह-ओ-आजरम अज मयां रफ्त।।

73. '(आप) देखते हैं कि दुनिया से भलाई उठ गई है; विश्वास, दया और लज्जा (भी) उठ गई है।'

74. *ज-ईमांहा बजुज नाम -ए नमांदा।*
बगैर अज दाना-ओ दाम-ए नमांदा।।

74. 'धर्म केवल नाममात्र रह गए हैं; (और) कोई (भी) अन्न कण (अपने नीचे छुपे हुए) जाल के बिना नहीं है।'

75. *पिदरहा तिश्ना-ए खून-ए पिसरहा।*
पिसरहा दुश्मन-ए जान-ए पिदरहा।।

75. 'पिता (अपने) बेटों के रक्त के प्यासे हैं' (और) बेटे (अपने) पिता की जान के शत्रु (बने हुए) हैं।'

76. *बिरादर बा-गिरादर दर सतेजस्त।*
वफाक अज शश-जिहत रू दर गुरेजस्त।।

76. 'भाई-भाई से लड़ रहा है; (और) मेल-मिलाप छहों कोनों (दिशाओं) में मुंह छिपाता फिर रहा है।'

77. *ब-दीन बेपर्दगीहा-ए अलामत।*
चे-रा पैदा न मी-गरदद कयामत।।

77. 'प्रलय (दिवस) के इन सारे लक्षणों (के दिखाई देने) के बावजूद प्रलय क्यों नहीं आता।'

78. *ब-नफ्ख-ए सूर ता'वीक अज प-ए चीस्त।*
कयामत-रा इनांगीर-ए जुनूं कीस्त।।

78. '(अब) सूर (प्रलय के दिन फूंका जाने वाला वाद्य) के फूंके जाने में क्या देर है; (और वह) कौन है जो प्रलय (रूपी घोड़े) की लगाम थामे हुए है।'

79. *सू-ए काशी ब-अंदाज-ए इशारत।*
तबस्सुम कर्द-ओ-गुफ्ता ई इमारत।।

79. (इस पर वह ज्ञानी) काशी की ओर बड़े (अनूठे) अंदाज से इशारा करते हुए; मुस्कुराया और बोला (कि) 'यह नगर'–

80. *कि हक्का नीस्त साने'-रा गवारा।*
कि अज हम रेजद ई रंगीं बिना-रा।।

80. 'सच तो यह है कि बनाने वाले (ईश्वर) को यह गवारा नहीं है; कि सुंदर नींव वाला यह नगर नष्ट हो जाए।'

81. *बुलन्द उफ्तादा तम्कीन-ए बनारस।*
बुवद बर औज-ए ऊ अंदेशा ना रस।।

81. 'बनारस की शान बहुत ऊंची है; (और) उसका शिखर (कल्पना की) पहुंच से परे है।'

82. *अला ऐ गालिब-ए कार उफ्तादा।*
ज-चश्म-ए यार-ओ-अगियार उफ्तादा।।

82. लेकिन ऐ नाकारा गालिब!'(तुम तो अपने) मित्रों और शत्रुओं (दोनों) की नजरों से गिर चुके हो।

83. *ज-ख्वेश-ओ आशाना बेगाना गश्ता।*
जुनूं गुलकर्दा-ओ-दीवाना गश्ता।।

83. तुम स्वयं से और अपने जानने वालों (दोनों) से अपरिचित से हो गए हो; तुम उन्माद में शोर करते हो, (यानी) दीवाने (ही) हो गए हो।

84. *ये महशर सरजद अज आब-ओ गिल-ए तू।*
दरेगा अज तू ओ आह अज दिल-ए तू।।

84. तुम्हारे अस्तित्व (में होने) से क्या प्रलय मचा है; (कि मुझे) तुम पर और तुम्हारे हृदय (की दुर्दशा) पर दुःख होता है।

85. *चे जुई जल्वा जी रंगीं चमनहा।*
बहिश्त-ए ख्वेश शो अज खूंशुदनहा।।

85. कौन-सा सौंदर्य (ऐसा) है जो तुम (काशी के) इन उपवनों में ढूंढ़ रहे हो; (अच्छा होगा यदि)तुम अपनी कामनाओं का दमन करके अपना (अलग) स्वर्ग निर्मित करो।

86. *जूनूनत गर ब-नफ्स-ए खुद तमामस्त।*
ज-काशी ता ब-काशं नीम गामस्त।।

87. *चूं बू-ए गुल ज-पैराहन बेरुं आए।*
ब-आजादी ज-बंद-ए तन बेरूं आए।।

88. *मदेह अज कफ तरीक-ए मा' रफत-रा।*
सरत गर्दम ब-गिर्द-ए ई शश -जिहत-रा।।

89. *फरूमांदन ब-काशी नारसाईस्त।*
खुदा-रा ई चे काफिर माजराईस्त।।

90. *अज ईदा 'वा ब-आतिश शूई लग-रा।*
ब-ख्वां गमनामा-ए जौक-ए तलब-रा।।

91. *ब-काशी लख्त-ए अज काशाना याद आर।*
दरी जन्नत अजां वीरान याद आर।।

92. *दरेगा दर वतन दामान्दा-ए चन्द।*
ब-खूं दीदा ज-वर्क-ए रान्दा-ए चन्द।।

93. *हवस-रा पा-ए दर दामन शिकस्ता।*
ब-उममीद-ए तू चश्म अज ख्वेश बस्ता।।

94. *ब-शहर अज बेकसी सहरा नशीना।*
ब-रू-ए आतिश-ए दिल जा गुजीना।।

95. *मगर कां कौम-रा दहर आफरीदा।*
ज-सीमाब बर आतिश आरमीदा।।

96. *हमा दर खाक-ओ-खूं अफगन्दा-इ तू।*
ब-हुक्म-ए बेकसीहा बन्दा-इ तू।।

97. *चू शम्म' अज दाग -ए दिल आजर-निशांना।*
ब-बज्म-ए अर्ज दा'वा बेजबानां।।

98. *सर-ओ-सरमाया गारत कर्दा-ए तू।*
ज-तू नालां वले दर पर्दा-ए तू।।

99. *अज आन्नानत तगाफुल खुश्नुमा नीस्त।*
ब-दाग-ए शां हवा-ए गुल रवा नीस्त।।

100. *तु-रा ऐ बेखबर कारेस्त दर पेश।*
बयाबाने-ओ कोहसारेस्त दर पेश।।

101. *चू सैलाबल शिताबां मी तवां रफ्त।*
बयाबां-दर-बयाबां मी तवां रफ्त।।

102. *तु-रा ज-अन्दोह मजनूं बूद बायद।*
खराब-ए कोह-ओ हामूं बूद बायद।।

86. यदि (सौंदर्य की खोज का) तुम्हारा उन्माद स्वयं में पूर्ण है; तो काशी से (तुम्हारे) घर की दूरी (मात्र) आधे पग की है।

87. पुष्प की सुगंध की भांति तुम अपने (शरीर के) आवरण से बाहर निकलो; (और यहां—बनारस में) मुक्ति के लिए अपने शरीर के बंधन से मुक्त हो जाओ।

88. जीव-मुक्ति के इस मार्ग को अपने हाथ से न जाने दो (या फिर) मस्तक पर धूल लिए छःओं कोनों (दिशाओं) में विचरते रहो।

89. काशी में खो जाना (और यहां से) कहीं न जाना; हे ईश्वर! यह कैसी अद्भुत घटना है।

90. ऐसा दावा करने से पहले (तुम) अपने अधरों को अग्नि से धो लो; (और) वासनाओं की कामना में (मिलने वाले) दुःख-वृत्तांत को पढ़ो।

91. काशी में (रह कर भी तुम) तनिक अपने घर (दिल्ली) को याद करो; इस स्वर्ग में (रह कर भी तुम) उस वीराने को याद करो।

92. खेद है कि (तुम्हारे) वतन (दिल्ली) में कुछ लोग मजबूर हैं; (जो) अपनी आंख के खून (आंसुओं) में (अपने जीवन की) नाव खे रहे हैं।

93. (वे अपनी) आकांक्षाओं को अपने पल्ले से झाड़ चुके हैं; (और) तुम्हारे वापस आने की उम्मीद से आंखें मूंद चुके हैं।

94. ये (लोग) नगर में होने पर भी बियाबान (जंगल में रहने) का कष्ट उठाते हैं; (और तुम्हारे वियोग में) हृदयाग्नि में (जलते हुए) गुजारा कर रहे हैं।

95. ऐसा लगता है कि उन लोगों को संसार में इस प्रकार (परेशानी में) लाया गया है; जैसे कि पारा आग के ऊपर (कहां) आराम से रहता है।

96. तुमने उन सब लोगों को धूल और रक्त में फेंक दिया है; (और) वे लोग तुम्हारे पराधीन हो गए हैं।

97. (वे लोग) मोमबत्ती की भांति अपने व्यक्ति हृदय से आग उगल रहे हैं; (और) वे लोग तुम्हारी आज्ञा से कष्टमय (जीवन जीते हुए), तुम्हारे पराधीन हो गए हैं।

98. तुमने उनकी जमा-पूंजी नष्ट कर दी है; (वे नहीं जानते कि) पर्दे के पीछे तुम ही हो। (नादान लोग तुम्हारी ही शिकायत कर रहे हैं, लेकिन (वे नहीं जानते कि) पर्दे के पीछे तुम्ही हो।)

99. तुम्हारे द्वारा उन लोगों की उपेक्षा अच्छी नहीं है; वे कष्टमय रहें और तुम फूलों के वातावरण में रहो, यह अच्छी बात नहीं है।

100. ऐ बेखबर! तेरे सामने (बहुत-सा) काम पड़ा हुआ है; तेरे सामने वनवास और भटकाव है।

101. तू तेज बाढ़ की भांति (आगे) बढ़ सकता है; (और) जंगल-जंगल लांघ सकता है।

102. तुझे तो मजनू की भांति दुःख (में दीवाना) होना चाहिए; (और) पहाड़ों में भटकने वाले (फरहाद) की भांति भटकना चाहिए।

103. *तन आसानी ब-ताराज-ए बला देह।*
चू बीनी रंज खुद-रा रुनुमा देह।।

103. तुम विपत्ति को अपनी सुविधाओं का हनन करने दो; (और) जब विपत्ति आती देखो तो स्वयं को उसके सम्मुख प्रस्तुत कर दो।

104. *हवस-रा सर ब-बालीन-एफना नेह।*
नफस-रा अज दिल -ए आतिश जेर-ए पा नेह।।

104. अपनी कामनाओं को नश्वरता के सिरहाने रख दो;(और अपनी) सांसों को अपने दिल की आग (इच्छा-शक्ति) से पैरों के नीचे दबा कर रखो।

105. *दिल अज ताब-ए बला ब-गुदाज-ओ-खुंकुन।*
ज-दानिश कार नकुशायद जुनूं कुन।।

105. अपने हृदय को विपत्ति की अग्नि में पिघला कर रक्ताभ कर दो; (अगर) समझदारी से काम न बने तो उन्माद से काम लो।

106. *नफ़स ता खूद फरु न नशीनद अज पाए।*
दम-ए अज जादा पैमाई मया साए।।

106. जब तक सांस (की डोर) टूट नहीं जाती; (तुम) पथ पर सतत चलते रहो।

107. *शरार आसा फना आमादा बर खेज।*
ब-यफ्शां दामन-ओ-आजादा बर खेज।

107. (तुम) चिंगारी की तरह लुप्त हो जाने के लिए तत्पर हो कर उठो; (और माया से) अपना पल्ला झाड़ कर आजाद हो जाओ।

108. *ज-इल्ला दमजन-ओ तस्लीम-ए ला शो।*
ब-गो अल्लाह-ओ-वर्क-ए मासिवा शो।।
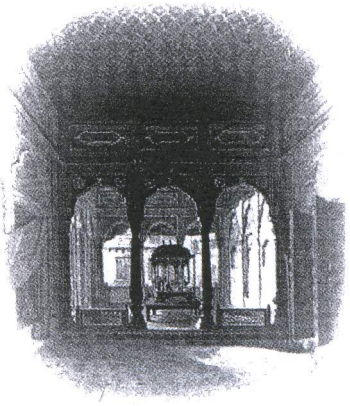
108. ईश्वर-भक्ति में मन लगाओ और माया की सत्ता को पहचानो; ईश्वर का नाम लो और उसके अतिरिक्त अन्य के लिए बिजली बन जाओ।